रात्रि क्लास 30-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चे यह तो समझते हैं बाप आया हुआ है परमधाम से। जब आते हैं तो बुधि में आता है ना परमधाम वाला शिव बाबा इसमें प्रवेश हो आये हैं। पवित्र बनाकर साथ में ले जावेंगे। यह तो अच्छा है ना। जाना ही है। क्योंकि असार भी विनाश के ऐसे देखने में आते हैं। बच्चे समझते भी हैं बर्ष दो और बाप समझाते रहेंगे। फिर तो लड़ाई में बहुत तंग हो जावेंगे तो फिर बम्स का प्रयोग शुरु कर देंगे। तीखे2 बनाते रहते हैं। हमको भी अभी ऐसे ही तीखा बनना है। पूरा सतोप्रधान बनना चाहिए ना। यह तो समझते हो परमधाम से बाबा आयेबही राजयोग सिखलाते हैं। कहते हैं बच्चों मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह डबल सिरताज है ना। इस समय भारत बिल्कुल ही फकीर है। फकीर अर्थात जिनके पास पैसे नहीं हैं। फ्री अनाज भी देते हैं। जो भारत कितना साहुकार था। बच्चों को समझना चाहिए। बाबा समझते हैं बच्चों को रिफ्रेश किया जाता है सुबह में। फिर वह आस्ते2 नशा कम हो जाता है। याद भी नहीं रहती। समझते तो बहुत ही हैं। यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। नई दुनिया सतयुग में होती है। देवीदेवतायें सतयुग में ही होते हैं। अभी फिर यह बनने का पुरुषार्थ करना है। दिन प्रति दिन खुशी बढ़ेगी। द्वापर से कम होती आई है। अभी फिर आस्ते2 चढ़ते2 ताकि फुल चढ़ जावेंगे। समझते हो शिव बाबा आया है हमको राजयोग सिखाने। बाप कहते हैं पावन बनो। बाप आया ही तब है जब कि बहुत दुःखी हैं। इसी संगम समय के बाद ही फिर सतयुग होगा। लड़ाई भी सामने खड़ी है। यह संगम का भी बाप ने समझाया है। मनुष्य तो आसुरी नींद में सोये हुये हैं। अक्षर तो ठीक है? कहते हैं बच्चों मैं तुमको पढ़ाता हूं फिर प्रायः गुम हो जाता है। फिर पुस्तक कैसे बने। सतयुग में तो यह होती नहीं। मनुष्य तो कह देते हैं सब शास्त्र परम्परा से हैं। लाखों वर्ष लगा दिया है। तो परम्परा से कह देते हैं। बच्चों को बाप समझाते हैं खबरदार रहना। मंजिल है, तुमको एकदम मंदिर लायक बनाते हैं। यह सारी दुनिया में रावण का राज्य है। रावण जलाते भी यही हैं। वही थोड़े ही जलाते हैं। तो बाप को बहुत प्रेम से बहुत खुशी से याद करना चाहिए। टीचर कहते हैं याद करो। बाप कहा तो बाप हुआ ना। फिर भूलना थोड़ेही चाहिए। माया की ताकत देखो कितने में खत्म कर देती है। चक्र फिरता रहता है यह तो समझा बहुत ही सहज है। सतयुग फास्ट हो गया। त्रेता द्वापर भी नहीं। कलियुग भी तुम्हारे लिये नहीं है। तुम हो संगम पर। वह कहदेते हैं कलियुग अजन्म बच्चा है। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। घोर नींद में सोये पड़े थे। तो इसमें गफलत न करनी है। बाप खुद कहते हैं मैं वानप्रस्त अवस्था में आता हूं। तुमको सुनाते हैं यह भी सुनते हैं। भूलने की तो बात ही नहीं है परन्तु माया ऐसी है जो संशय में, विकल्पों में ले आती है। जिन्होंने कल्प पहले जितना पढ़ा है उतना ही पढ़ेंगे। अभी तुम चिड़ियां हो जो सागर को सुखाती हो। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। मनुष्य जो सुनते सत2 कह देते हैं। गणेश आदि पर बहुत खर्चा करते हैं। बाप समझाते हैं वह सभी है भक्ति मार्ग। बाप कहते हैं मैं आया हूं सौदा करने। कहते हैं बाबा यह सभी आप का है। अभी हम दया करें। पैसे रखो अपने पास। सिर्फ खर्चा आदि जो करो वह पूछना। क्योंकि यह पैसे हो गये पुण्य के। इसलिये कहां पाप में नहीं लगाना। सौदागर उनको कहा जाता है ना जादूगर भी उनको कहा जाता है। तुम जानते हो हम विश्व का प्रिन्स बनेंगे। शरीर छोड़ेंगे और गोल्डेन एज इन भाग्य होगा। अभी तुम पुण्यात्मा बनते हो। पापात्माओं को कुछ देना न है। कन्या दान देना भी पाप होता है। अभी यह पाप का काम न करो। प्यार से समझाओ। न समझे तो फिर देना पड़े। नहीं तो फिर छी2 बन पड़ेंगे। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। फिर भी वेश्यालय में चले जाते हैं। तुम बच्चों को निश्चय है बाबा आया हुआ है। बाप सभी को आराम से ले जाते हैं यह याद की यात्रा देखो कैसी है। याद में पक्के हो जावेंगे तो याद करते2 गुम हो जावेंगे। बाबा की याद की प्रैक्टीस की जाती है। याद में रहते2 चले जावेंगे। ऐसी अवस्था वाले ही स्कालरशिप लेते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे धारणा अच्छी रीत करो। याद की यात्रा में रहने खूब पुरु0 करो। डरने की बात नहीं। तूफानों को आने दो। तुम फास्ट बिलवेट बाप की याद में रहो। अच्छा गुडनाईट।